हाउस द जोश के नारे से हुआ आईईटी 'शुभारंभ-2019' का आगाज़

स्टूडेंट्स से कर्नल भूषण ने कहा- मुझे आर्मी ने खाना और नींद लेना भी सिखाया ताकि दुश्मन से लड़ सकें

IAmIndore • इंदौर
editor@peoplessamachar.co.in

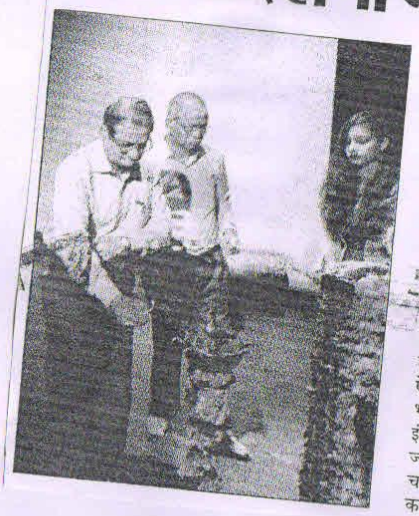

शिक्षा के अलावा व्यक्ति को अन्य चीजें भी अपने जीवन में जोड़नी चाहिए। इंसान दुनिया की सबसे बड़ी मशीन है। आज हम चन्द्रमा तक पहुंच गए हैं। लेकिन पृथ्वी में हमें स्वच्छ हवा, पानी मिल रहा है, फिर भी हम आसानी से जीवन-यापन नहीं कर पा रहे हैं। आपस में भिड़ने की बजाय हमें प्रकृति से जुड़कर बेहतर और समृद्धपूर्वक जीवन जीना चाहिए। इसके साथ ही विद्यार्थियों को संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि केवल डिग्री मत लीजिए, ऐसी शिक्षा प्राप्त कीजिए, जो आपका भविष्य संवारे। अंत में टाइम मैनेजमेंट को इंगित करते हुए कहा कि आजकल ज्यादातर बच्चे 95% समय मोबाइल चलाने, दोस्तों के साथ सैर करने में बर्बाद कर देते हैं। यह बात देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी द्वारा सोमवार को नए स्टूडेंट्स के लिए छात्र प्रेरणा कार्यक्रम 'शुभारंभ 2019' के आयोजन में डॉ. रवि शेषाद्रि ने कही।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एनसीसी मुख्यालय इंदौर के कर्नल भूषण, कर्नल राजेश सिंह, विशेष अतिथि अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के समन्वयक डॉ. रवि शेषाद्रि व अध्यक्ष पूर्व कुलपति प्रो. आशुतोष मिश्रा [illegible]

कार्यक्रम दौरान [illegible] ने 'हाउस द जोश' व 'उरी' फिल्म का उल्लेख करते हुए कहा कि जहां धर्म होता है, वहीं विजय होती है। वहीं परीक्षार्थी और विद्यार्थी में अंतर समझाते हुए कहा कि मैं नेशनल कैडिट कोर से हूं, आपको लगता होगा कि मुझे शूटिंग और फायरिंग करना ही सिखाया होगा, लेकिन मुझे आर्मी ने खाना और नींद लेना भी सिखाया था, ताकि हम दुश्मन से लड़ सकें और उसे मुंहतोड़ जवाब दे सकें। विद्यार्थी धर्म होने के साथ-साथ सैनिक धर्म भी होना चाहिए।

कर्नल राजेश ने कहा कि एनसीसी विशेष तौर पर फुल टेक्निकल वैकेंसी है, जो वर्तमान समय में विश्वविद्यालय में नहीं है। एनसीसी की शुरुआत जल्द ही की जाएगी। जब तक शुरुआत नहीं हो रही है, तब तक आप लोग ओपन वैकेंसी के माध्यम से आर्मी में आ सकते हैं। पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. आशुतोष मिश्रा ने कहा कि आप लोग सौभाग्यशाली हैं कि एनसीसी की शुरुआत अगर होगी तो आप से ही होगी। एनसीसी बोर्ड आपको डिसिप्लीन सिखाती है, आईईटी में भी बहुत डिसिप्लीन होता है। भविष्य के सपनों पर मिश्रा ने बताया कि कुछ लोग खुली आंख से सपने देखते हैं तो वहीं कुछ लोग बंद आंख से सपने को देखते हैं, निर्भर करता है आप कैसे सपने देखते हो।